रजिस्ट्रेशन संख्या :– R.N.I. 36355/79
डाक पंजीकरण संख्या :– Kanpur City – 67/2015–2017

चिकित्सा–विज्ञान और प्रौद्योगिक जगत में सर्वाधिक प्रकाशित होने वाला निष्पक्ष समाचार पत्र

पाक्षिक

इलेक्ट्रो होम्यो मेडिकल गज़ट

पत्र व्यवहार हेतु पता :– ,
सम्पादक, इलेक्ट्रो होम्यो मेडिकल गज़ट, 127/204 'एस' जूही, कानपुर–208014

वर्ष –39 ● अंक –17 ● कानपुर 1 से 15 सितम्बर 2017 ● प्रधान सम्पादक – डा0 एम0 एच0 इदरीसी ● वार्षिक मूल्य – ₹ 100

आवश्यक सूचना

समस्त इलेक्ट्रो होम्योपैथिक चिकित्सकों को सूचित किया जाता है कि वे अपना ई–मेल आई0डी0 व मोबाईल नं0 कार्यालय को प्रेषित करें ताकि उन्हें नवीनतम सूचनाये E-mail अथवा S.M.S. के माध्यम से भेजी जा सके।

रजिस्ट्रार
registrarbehmup@gmail.com

दिसम्बर के बाद भी रहना होगा सतर्क

ज्यों–ज्यों दिसम्बर का महीना करीब आता जा रहा है हमारे इलेक्ट्रो होम्योपैथिक साथियों के मन में तरह–तरह के विचार जन्म लेने लगे हैं अधिकांश साथी तो यह मान बैठे हैं कि दिसम्बर के बाद उनकी सारी इच्छायें पूरी हो जायेंगी और वे और उनके साथी अधिकारपूर्वक चिकित्सा व्यवसाय करेंगे।

ऐसा नहीं है कि अभी इलेक्ट्रो होम्योपैथी से चिकित्सा व्यवसाय करने में कोई परेशानी है, चिकित्सा व्यवसाय करने का पूर्ण अधिकार हमें प्राप्त है परन्तु जो वातावरण वर्तमान में दिखाई पड़ रहा है वह एकदम अलग है हमारे साथियों के मन में सपने हैं, इच्छायें हैं और कल्पनायें भी हैं।

ऐसा लगता है कि जैसे लोगों की बरसों की मुराद पूरी हो रही है इसलिये सब एक सुःखद भविष्य की कल्पना में डूबे हुये योजनायें बना रहे हैं योजनायें बनाना बुरी बात नहीं होती है जो काम योजना बना कर किया जाता है सामान्यतयः वह कार्य पूरे होते हैं परन्तु योजनायें तभी बनानी चाहिये जब उसके सारे पक्ष सुस्पष्ट रुप से मज़बूत हों, योजनाओं को फलीभूत होते देखना तो हर व्यक्ति का सपना होता है, इलेक्ट्रो होम्योपैथी भी आजकल योजनाबद्ध तरीके से आगे बढ़ रही है, बचे हुये शेष चार महीनों में अभी कई परिवर्तन आयेंगे और इन परिवर्तनों से हम सब को जूझना पड़ता है तब कहीं जा कर परिवर्तन आत्मसात होते हैं।

हम सब लोगों को यह बात जान लेनी चाहिये कि 31 दिसम्बर, 2017 का दिन इलेक्ट्रो होम्योपैथिक के आन्दोलन का विराम का दिन नहीं है अपितु यदि सरकार की मंशा ठीक–ठाक रही तो 31 दिसम्बर के बाद ही इलेक्ट्रो होम्योपैथिक की दिशा और दशा सुधरने की दिशा में वास्तविक कार्य प्रारम्भ होगा, 31 दिसम्बर, 2017 तक तो सरकार आपके प्रतिवेदनों का इन्तेज़ार करेगी उसके बाद कमेटी प्रेषित प्रपोज़लों पर विचार करेगी, फिर समीक्षा होगी, तदोपरान्त किसी परिणाम की अपेक्षा की जा सकती है, यह प्रक्रिया छोटी भी हो सकती है और लम्बी भी हो सकती है, जो भी हो प्रतीक्षा तो करनी ही होगी इसलिये मन को प्रसन्न तो रखिये परन्तु कल्पनालोक में विचरण मत कीजिये।

एक संस्था तो बाकायदा प्रसारित कर रही है कि इलेक्ट्रो होम्योपैथिक के चिकित्सकों को सरकारी नौकरियां मिलेंगी इस धामक प्रचार से चिकित्सकों के मन में तरह–तरह के भाव जागृत हो चुके हैं, जब कानून बनेगा, नियमतिकरण होगा तो निश्चित रुप से हमें वह सारे लाभ मिलेंगे जो अन्य मान्यता प्राप्त चिकित्सा पद्धतियों के चिकित्सकों को प्राप्त होते हैं परन्तु इस अवसर के लिये आपको अभी प्रतीक्षा करनी होगी, हम अपने पाठकों को एक बार पुनः बता दें कि 28 फरवरी, 2017 को भारत सरकार ने जो पत्र जारी किया है वह इलेक्ट्रो होम्योपैथिक के मैकेनिज़्म के सम्बन्ध में है, मैकेनिज़्म का शाब्दिक अर्थ व्यवस्थाओं का निमार्ण है।

हम सभी जानते हैं कि लगभग डेढ़ सौ वर्षों से इलेक्ट्रो होम्योपैथिक चिकित्सा पद्धति का प्रचार व प्रसार सम्पूर्ण भारतवर्ष में है और इन डेढ़ सौ वर्षों में इलेक्ट्रो होम्योपैथिक चिकित्सकों की संख्या बढ़कर लाखों में हो गई है और इतनी बड़ी संख्या अब अपना अधिकार मांगने लगी है, आज़ादी के सत्तर साल के बाद भी इलेक्ट्रो होम्योपैथों के लिये किसी नीति का निर्धारण नहीं होना नितान्त दुःखद है।

जो लोग वर्षों से इस चिकित्सा पद्धति से जुड़े हैं उनके मन में कहीं न कहीं यह टीस है कि सरकार लगातार उनकी उपेक्षा कर रही है, उपेक्षा सहन करने की भी एक सीमा होती है और जब सीमायें टूटने लगती हैं तब आन्दोलन मुखर हो जाता है, आज इलेक्ट्रो होम्योपैथी की यह हालत इसी कारण हुई है क्योंकि सरकार लगातार इलेक्ट्रो होम्योपैथी को विनियमित करने से कतराती रहती है, कमेटियां बनाती है, जाँच रिपोर्ट आती है और फिर कोई न कोई कमी बता कर सरकार नियमतिकरण से बचती रहती है परन्तु इस बार कुछ आशा बलवती है कारण अब

- ✓ दिसम्बर,'17 पूर्ण विश्राम नहीं
- ✓ सतर्कता अब पहले से ज़्यादा
- ✓ संयम अभी भी आवश्यक
- ✓ प्रपोज़लों की गति हुई धीमी
- ✓ मानसिक स्तर पर सब एक
- ✓ सफलता में नहीं है संशय

इलेक्ट्रो होम्योपैथी का विकास पहले की अपेक्षा अधिक हो चुका है और इलेक्ट्रो होम्योपैथी के पास 21 जून, 2011 व 04 जनवरी, 2012 जैसे मज़बूत अस्त्र हैं इन अस्त्रों को सरकार कबतक नज़र अन्दाज़ करेगी सरकार भलीभांति यह जानती है कि अब इलेक्ट्रो होम्योपैथिक का संख्याबल इतना अधिक है कि किसी भी आन्दोलन को गति देने में ज़रा भी देर नहीं लगेगी इस बार सरकार ने अपनी गति धीमी ज़रुर रखी है परन्तु उसकी इच्छा स्पष्ट नज़र आ रही है कि अब सरकार इलेक्ट्रो होम्योपैथी के लिये कुछ न कुछ नीतिगत फैसला लेकर ही रहेगी।

अब यह हम सब का दायित्व है कि हमारे साथी ऐसा कोई कदम न उठा लें जिससे कि सरकार को बच निकलने का कोई अवसर प्राप्त हो जाये, मैकेनिज़्म के नाम पर सरकार ने जो कुछ भी जानना चाहा है उसके स्पष्ट उत्तर इलेक्ट्रो होम्योपैथी के पास उपलब्ध हैं परन्तु फिर भी यदि एक बार सरकार ने यह जानकारियां हम सबको उपलब्ध कराने का अवसर दिया है तो हमें इस अवसर को खोना नहीं चाहिये, सरकार ने दस महीने का लम्बा समय निर्धारित किया है जिसमें से लगभग छः महीने समाप्त होने वाले हैं, चार माह का समय अभी शेष है और इन चार महीनों में हमें अपने संतुलन को बरकरार रखना है तथा यह पूरा प्रयास भी करना है कि हमारे साथी भी उत्साह में जोश के साथ होश न खोयें। मार्च और जून की प्रक्रिया के बाद जो कुछ भी घटनाक्रम घटा उससे हमने सीख ली है और यह दिखाई भी पड़ रहा है कि आने वाले महीनों में हमारे साथी और भी अधिक परिपक्वता का परिचय देते हुये सरकार के समक्ष अपने प्रपोज़ल के रुप में प्रस्तुत होंगे, औषधि निर्माण के विषय में भी जो मतभिन्नता दिखाई पड़ती थी शनैः शनैः वह समाप्त हो रही है और लोग एक दूसरे की भावनाओं को समझने भी लगे हैं।

हम सब दिसम्बर के बाद जिस परिवर्तन की प्रतीक्षा कर रहे हैं निश्चित रुप से इस बार हमें निराशा नहीं मिलेगी निश्चित रुप से सरकार मानक बनाने की दिशा में मज़बूत कदम उठायेगी, यह मानक क्या होंगे ?कैसे होंगे ?यह तो पता नहीं है लेकिन जो भी होगा अच्छा होगा इलेक्ट्रो होम्योपैथी के लिये एक दिशा तय करेगा, हमारे जो साथी सरकार के कदम को मान्यता के रुप में देख रहे हैं उन्हें भी प्रसन्न रहना चाहिये क्योंकि सरकार का यह व्यवहार इलेक्ट्रो होम्योपैथिक की मान्यता के लिये उठाया गया एक मज़बूत कदम ही है, जिन लोगों के मन में कई तरह के सपने जन्म ले रहे हैं उनके सपनों को पूरा होने का समय आ रहा है परन्तु सपने ऐसे देखने व दिखाये जाना चाहिये जिससे कि किसी की भी भावनायें आहत नहीं हों क्योंकि यदि भावनायें आहत होती हैं तो अविश्वास का जन्म होता है और अविश्वास कार्य को प्रभावित करता है अस्तु दिसम्बर को लेकर जो मन में सपने पाले हैं उन सपनों को साकार करने के लिये लग जाईये सरकार अपना काम करेगी आप अपना काम करें।

कर्म के प्रति विश्वास ही सफलता की सबसे आसान डगर है।

अब होड़ हुई समाप्त

इलेक्ट्रो होम्योपैथी को शीघ्र से शीघ्र मान्यता मिल जायेगी यह विश्वास हमारे इलेक्ट्रो होम्योपैथों के मन में उस समय घर कर गया था जब इलेक्ट्रो होम्योपैथी के मैकेनिज़्म के लिए 28 फरवरी, 2017 को भारत सरकार ने एक नोटिस जारी किया था, इस नोटिस के आते ही पूरे देश में एक बारगी प्रसन्नता की लहर फैल गयी थी और देश में जितने भी संगठन इलेक्ट्रो होम्योपैथी के लिये काम कर रहे थे या काम कर रहे हैं सब के सब बहुत तेज़ी के साथ सक्रिय हो गये और इसी सक्रियता का परिणाम था कि 28 फरवरी और 30 मार्च के बीच के कालखण्ड में ही लगभग 7 लोगों ने अपने–अपने प्रपोज़ल सरकार को प्रेषित कर दिये। जैसे ही लोगों को इन प्रपोज़लों के जाने की भनक लगी हर तरफ़ प्रपोज़ल भेजने की चर्चा होने लगी, समूहों और इकाई को छोड़ दीजिये चिकित्सक–चिकित्सक तक प्रपोज़ल भेजने का मन बनाने लगा था।

पूरे देश में लोगों में पहले हम–पहले हम की तर्ज़ पर प्रपोज़ल देने की होड़ मचने ही वाली थी तभी भारत सरकार का 13 जून का पत्र आया जिसके माध्यम से लोगों को सातों प्रपोज़ल अस्वीकार होने की जानकारी मिली, इससे लोगों में निराशा हुई और जो प्रपोज़लों की होड थी उसकी गति धीमी पड़ी।

बदलती सोच

यह निर्विवाद सत्य है कि व्यक्ति की सोच पर ही कार्यों के परिणाम निर्भर करते हैं, सही दिशा व सही समय पर लिये गये सकारात्मक निर्णय न केवल कार्य को गति प्रदान करते हैं अपितु उद्देश्य तक पहुँचाते हैं।

पिछला पखवारा इलेक्ट्रो होम्योपैथी के लिये काफ़ी राहत भरा रहा है क्योंकि पूरे देश का मूड अब सकारात्मक विचारों का सा लग रहा है। 28 जुलाई, 2017 को माननीय सांसदों द्वारा संसद में पूछे गये प्रश्न और इन प्रश्नों के उत्तर में माननीया स्वास्थ्य राज्यमंत्री ने सदन में जो कुछ भी कहा उससे एक बारगी पूरे देश के इलेक्ट्रो होम्योपैथों के मन में एक भूचाल सा आ गया था, स्थिति में अनायास परिवर्तन आ गया था कुछ के मन में आक्रोश था और कोई भयभीत।

लोग परस्पर यह चर्चा करने लगे थे क्या वर्ष 2004 की पुनरावृत्ति होने वाली है, तरह–तरह की शंकायें मन में जन्म ले रही थीं , अधिकांश इलेक्ट्रो होम्योपैथ अनिश्चय की स्थिति में जी रहा था, शान्ति और स्थिरता के स्थान पर भय और बेचैनी ने स्थान ग्रहण कर लिया था और तो और जो इलेक्ट्रो होम्योपैथी आन्दोलन के अग्रदूत थे वे भी अपने आपको किमकर्तव्यविमूढ़ पा रहे थे, कोई रास्ता नज़र ही नहीं आ रहा था ऐसे में टेलीवीज़न पर बजती हुई धुन .....

नज़र आती नहीं मन्ज़िल !
तो रोने से भी क्या हासिल !!

जले पर नमक छिड़कने जैसा कार्य कर रही थी परन्तु जो विद्वानों ने कहा है कि संयम से बड़े से बड़े बिगड़े कार्य बन जाते हैं, पर यहाँ तो कुछ बिगड़ा ही नहीं था, साथियों ने टेलीवीज़न पर प्रश्नोत्तर की प्रक्रिया देखी और ले लिये निर्णय, सोशल मीडिया के माध्यम से धड़ा–धड़ सन्देशों का आदान–प्रदान होने लगा, कुछ ही घण्टों में एक खुशनुमा वातावरण भययुक्त वातावरण में बदल गया, भय भी इस तरह व्याप्त था कि लोगों ने इसे शब्दों के माध्यम से सोशल मीडिया पर प्रदर्शित भी किया, जिन्हें रात को किसी कारण वश जानकारी नहीं हुई सुबह के समाचार पत्रों ने उन्हें भी जागृत कर दिया।

24 घण्टे के अन्दर इलेक्ट्रो होम्योपैथी के अन्दर भिन्न–भिन्न तरह के विचार आने लगे, कोई संसद के घेराव की बात कर रहा था तो कोई अवमानना की धमकी दे रहा था, कोई माननीया मंत्री जी से मिलकर स्पष्टीकरण की माँग कर रहा था और जिसे कुछ नहीं सूझ रहा था वह अपने आपको कोस रहा था कि पता नहीं किस घड़ी में उसने इलेक्ट्रो होम्योपैथी में प्रवेश किया था ! यह सब दृष्य उतावलेपन को नहीं दर्शा रहे थे अपितु मनकी पीड़ा को प्रकट कर रहे थे, उन्हें लग रहा था कि इलेक्ट्रो होम्योपैथी में जब–जब कोई अच्छे दिन आने के संकेत मिलते हैं तभी पता नहीं क्या हो जाता है कि कोई न कोई ऐसा घटनाचक्र घूम जाता है जो हमारे वर्षों के इन्तेज़ार पर चन्द पलों में ही पानी फेर देता है।

यदि हम पूरे परिदृष्य पर एक दृष्टि डालें तो एक बात तो स्पष्ट हो जाती है कि पिछले चार वर्षों से केन्द्र सरकार यह सतत प्रयास कर रही है कि किसी भी तरह से इलेक्ट्रो होम्योपैथी को कानूनी आवरण में पिरो दिया जाये जिससे कि वर्षों से चली आ रही अनिश्चितता समाप्त हो जाये और इलेक्ट्रो होम्योपैथी चिकित्सा पद्धति भी चिकित्सा की मुख्य धारा से जुड़ जाये। जब–जब कोई महत्वपूर्ण निर्णय लिये जाते हैं तब उन महत्वपूर्ण निर्णयों को लेने से पहले हर बिन्दु पर गम्भीरता से विचार कर लेना होता है।

चिकित्सा एक ऐसा विषय है जिसका सीधा सम्बन्ध मानव जीवन से है और मानव जीवन से जुड़े किसी भी विषय पर निर्णय तभी सम्भव है जब हर कोंण से संतुष्टि मिल जाये, 28 फरवरी, 2017 को भारत सरकार ने जो कुछ भी जानना चाहा है वह इसी संतुष्टि का एक अंग है, जो लोग यह तर्क देते हैं कि सरकार को सब कुछ ज्ञात है फिर वह क्यों पूछ रही है ?उनके लिये एक ही उत्तर है कि जो प्रश्नावली सरकार ने तैयार की है उसका उत्तर देने में केवल वही सक्षम हैं जो वर्षों से इलेक्ट्रो होम्योपैथी से जुड़े हैं, भारत सरकार की कमेटी में एक भी इलेक्ट्रो होम्योपैथ सम्मिलित नहीं है जो सरकार को सही राय दे सके।

आने वाले समय में जब सरकार प्रपोज़लों की समीक्षा करेगी तब निश्चित रुप से कोई न कोई वरिष्ठ इलेक्ट्रो होम्योपैथ सम्मिलित किया जायेगा बहुत सम्भव है कि वह हम होंगे या फिर आप।

बढ़ रही हैं नज़दीकियाँ

कभी–कभी कुछ ऐसा भी घटता है जब दूरियां नज़दीकियों में बदलने लगती हैं सामान्य परिस्थितियों में यह परिवर्तन तभी दिखाई पड़ते हैं जब बहुत ज़्यादा सुःख का समय आ गया हो या फिर जीवन की परिस्थितियां असमान्य हो रही हों, आजकल इलेक्ट्रो होम्योपैथी में जो कुछ भी हो रहा है वह सामान्य परिस्थिति में नहीं हो रहा है परन्तु परिस्थितियां असमान्य हैं यह भी कहीं दूर–दूर तक दिखाई नहीं पड़ रहा है, कुछ भी हो नज़दीकियां तो बढ़ रही हैं, यह नज़दीकियां भविष्य के अच्छे संकेत दे रही हैं और यदि सब कुछ ऐसा ही चलता रहा तो बहुत संभव है कि शीघ्र ही पूरे देश में इलेक्ट्रो होम्योपैथी के लिये एक राय बन जाये।

यह जो कुछ भी आज– कल हो रहा है वह अनायास ही नहीं हो रहा है, यह ठीक उसी प्रकार से है जैसे सब कुछ ठीक–ठाक चल रही इलेक्ट्रो होम्योपैथी में अचानक संसद में सवाल उठना और सवाल का उत्तर मिलना, कहने को तो हम यह सभी कह रहे हैं कि 28 जुलाई, 2017 को इलेक्ट्रो होम्योपैथी में जो कुछ भी घटा वह अनायास ही हुआ, किसी को भी इसके बारे में ज़रा सा भी एहसास नहीं था, ऊपरी दृष्टि में तो यह शब्द बहुत सीधे–साधे लगते हैं परन्तु यदि आप गंभीर दृष्टिकोण से इस विषय पर विचार करें तो आप को रहस्य के जो परदे उठते नज़र आयेंगे जिन्हे देख कर आप स्वयं आशचर्य चकित हो जायेंगे। ज़रा आप सोच कर देखिये जो सांसद और विधायक आपके बारे बात तक करना पसंद नहीं करते हैं यदि वे आपके लिये संसद में सवाल कर रहे हैं तो यह किसी भ्रमजाल से कम नहीं लगता है।

संसद में सवाल पूछने से पहले सांसद को एक प्रक्रिया पूर्ण करनी पड़ती है तब कहीं जाकर वह सांसद संसद के पटल पर प्रश्न पूछ सकता है। पहली बात तो जो सांसद इलेक्ट्रो होम्योपैथी के बारे में सवाल पूछ रहा है उसकी रुचि इलेक्ट्रो होम्योपैथी में क्या है ?यह उसकी व्यक्तिगत रुचि है या किसी व्यक्ति विशेष के लिये वह सवाल पूछता है ! यहां पर एक बात बार–बार मन को कचोटती है कि जहां एक सांसद हमारी सहायता के लिये आगे आने में आनाकानी करता हो वहीं एक साथ तीन–तीन सांसद इलेक्ट्रो होम्योपैथी की पैरवी करते हुये दिख रहे हैं, पैरवी शब्द का प्रयोग इसलिये है क्योंकि वकील पक्ष का हो या प्रतिपक्ष का वह पैरवी ही करता है, इसी तरह देश के अलग– अलग प्रांतों के अलग–अलग दलों के सांसद इलेक्ट्रो होम्योपैथी के लिये सवाल करें यह शान्त मन में एक झनझनाहट पैदा कर देता है, झनझनाहट कहें या सनसनी दोनों ही शब्द यहां पर लागू हो रहे हैं क्योंकि यह सब तब घटा जब भारत सरकार द्वारा इलेक्ट्रो होम्योपैथी के लिये एक सकारात्मक निर्णय लेते हुये एक इन्टरडिपार्टमेन्टल कमेटी का गठन हो चुका था और सरकार ने पूरे देश के इलेक्ट्रो होम्योपैथों का आवाहन भी किया हुआ है कि वे इलेक्ट्रो होम्योपैथिक के सन्दर्भ में वांछित जानकारियां सरकार को उपलब्ध करायें और सरकार प्राप्त जानकारियों के आधार पर कोई ठोस निर्णय ले सके।

सब कुछ तो ठीक–ठाक चल रहा था फिर आखिर इस तरह की प्रश्नों को पूछने के क्या औचित्य है ?हम एक सतर्क निगाह से पूरे घटनाक्रम पर दृष्टि डालें तो मन में एक–दो नहीं कई प्रकार की शंकायें पैदा होती हैं और मन एक अज्ञात भय की तरफ़ बढ़ने लगता है। प्रथम शंका तो यह है कि जब भारत सरकार बिलकुल सही नीति के साथ इलेक्ट्रो होम्योपैथी को आगे बढ़ने का अवसर प्रदान कर रही है और लोगों को तीन–तीन माह के अन्तराल में अपने प्रपोज़ल देने का अवसर भी दे रही है, प्रथम अवसर 31 मार्च, 2017 को द्वितीय अवसर 30 जून, 2017 को इन दोनों अवसरों का लाभ उठाते हुये हमारे साथियों ने प्रपोज़ल भेजे, इसे संयोग ही कहा जायेगा कि प्रथम आवृत्ति में सात प्रपोज़लों में से सात–के सातों को स्वीकार के योग्य नहीं पाया, उनको यह कह कर वापस कर दिया कि आप को एक अवसर और प्रदान किया जाता है।

ठीक 13 जून के पत्र के बाद 28, जुलाई, 2017 का घटनाक्रम किसी न किसी जोड़ गाँठ की तरफ़ स्पष्ट इशारा कर रहा है ! यह क्यों हुआ ?कैसे हुआ ?यह सब सरकारी एजेन्सियों की तरह गर्भ में ही रह जायेगा, जो कुछ भी हुआ वह 28 जुलाई, से 2 अगस्त, 2017 के बाद शमन हो गया, बदले हुये भावों में सुधार आया, आक्रोश के स्थान पर विवेक ने जन्म लिया, दूर होती आपसी भावनायें धीरे–धीरे नज़दीकियों में बदलने लगीं, कल तक जो सब कुछ अलग–अलग दिख रहा था 28 जुलाई की घटना ने लोगों के मन में एक हो कर कार्य करने की भावनाओं को जन्म दिया और हमारे साथी यह गुनगुनाने लगे .....

दूरियां नज़दीकियां बनने लगीं

आज पूरे देश में इलेक्ट्रो होम्योपैथी के लिये एक खुशनुमां वातावरण है, भय से कोसों दूर एक बार फिर हमारे साथी सुःखद भविष्य की कल्पना के ताने–बाने बुन्ने लगे हैं, हम प्रभू से प्रार्थना करते हैं कि शेष बचे हुये दिन अच्छे से गुज़रें, अब ऐसी कोई अव्यवस्था पैदा न हो जिससे कि कुछ नया वातावरण बनें, वैसे तो सब कुछ सामान्य सा लग रहा है, दूर–दूर तक किसी जटिलता की आगत दिखाई नहीं पड़ रही है।

जो सात प्रपोज़ल वापस हुये हैं इन वापस प्रपोज़लों ने हमारे सभी साथियों को काफ़ी कुछ सतर्क कर दिया है, पूरे देश में एकता की एक नई लहर दिखाई पड़ रही है आपसी वैमनस्यता काफ़ी पीछे छूट चुकी है, अब तो संभवनायें ही संभावनाये नज़र आ रही हैं, परस्पर एक दूसरे के साथ मिल–बैठ कर चर्चायें भी होने लगी हैं और सबसे सुःखद बात तो यह है कि जो परस्पर की, आपसी ऊपर व नीचे की बातें थीं वह एक तरह से समाप्त हो चुकी हैं, अबतो ऐसा दिखाई पड़ रहा है कि हमारे सभी साथी व्यक्तिगत हितों से ऊपर उठ कर सिर्फ़ और सिर्फ़ इलेक्ट्रो होम्योपैथी के विकास में तनमयता से लगे हैं, यह दृष्य अभी तक यदा–कदा ही देखने को मिला करते थे परन्तु अब यह दृष्य आम हो गये हैं।

व्यक्तिगत हितों की टकराहट से ऊपर उठकर इलेक्ट्रो होम्योपैथी की बात हो रही है यह भविष्य के साथ–साथ हम सभी के लिये भी बहुत अच्छी स्थिति है, पहले जो बात–बात पर एक दूसरे को नीचा दिखाने में जो आनन्द आता था अब इस आनन्द के दर्शन दुलर्भ हो गये हैं, लोग एक दूसरे के पास स्वंय मिलने जा रहे हैं उनके विचारों का सम्मान कर रहे हैं और जो स्वीकरणीय है उसे हाथों–हाथ स्वीकार भी कर रहे हैं।

कानपुर, इलाहाबाद, पटना, दिल्ली, मुम्बई, उत्तराखण्ड, व झारखण्ड में यह सब दृष्य अब आम हो चुके हैं, यदि यह सब इसी तरह चलता रहा तो निसन्देह कोई भी ताकत, कोई भी विरोधी कुछ भी कर ले इलेक्ट्रो होम्योपैथी का कोई भी नुकसान नहीं कर सकता है।

आज तीन सांसदों ने इलेक्ट्रो होम्योपैथी के लिये सवाल पूछे हैं, कल तीन सौ सांसद इलेक्ट्रो होम्योपैथी की आवाज़ बनेंगे और यह आवाज़ एक नई दिशा निर्मित करेगी।

कार्यों के मूल्यांकन हेतु प्राधिकरण का गठन हो

हर सक्षम व्यक्ति यही कहता है कि व्यक्ति को कार्य करना चाहिये निश्चित रुप से एक दिन ऐसा आता है जब उस व्यक्ति को अपने कार्यों का फल मिलता है, श्रीमद भागवत गीता में भी भगवान श्रीकृष्ण ने कहा है कि कर्म करो फल की चिन्ता मत करो परन्तु हम जितने भी लोग इलेक्ट्रो होम्योपैथिक चिकित्सा विधा से जुड़े हैं उनके मन में बार–बार यह प्रश्न उठता है कि उपरोक्त दोनों वाक्य हम पर किस तरह व्यवहरित होते हैं।

इलेक्ट्रो होम्योपैथों को काम करते करते डेढ़ सौ वर्ष से ऊपर का समय बीत गया परन्तु इतनी लम्बी अवधि बीत जाने के उपरान्त भी हमें अपने कार्यों का वह परिणाम नहीं प्राप्त हुआ जो हमें वास्तव में प्राप्त होना चाहिये, कभी–कभी तो ऐसा लगने लगता है कि पूरी दुनिया में इलेक्ट्रो होम्योपैथ ही एक ऐसा है जो श्रीकृष्ण की बातों को पूरे तौर पर मान रहा है अर्थात बिना किसी फल एवं कामना के कार्य करता चला जा रहा है।

मन बार–बार यह सोचने को विवश हो जाता है कि आखिर हमारे अन्दर कौन सी ऐसी कमी है जिसके चलते हमें अपेक्षित परिणाम नहीं प्राप्त हो पा रहे हैं ! ऐसा नहीं है कि परिणाम नहीं आते चिकित्सक चिकित्सा करता है, रोगी ठीक होता है, परिणाम आता है, हमारा छात्र इलेक्ट्रो होम्योपैथी की शिक्षा लेता है, ज्ञानार्जन करता है, परीक्षा में सम्मिलित होता है, सफल या असफल होता है परन्तु परिणाम आता है। परिणामों की अपनी अलग–अलग परिभाषायें हैं और हर परिभाषा अपना एक अलग स्थान रखती है परन्तु कुछ परिणाम ऐसे होते हैं जिसका सीधा प्रभाव समाज से जुड़ा होता है और यह परिणाम तभी प्राप्त होते हैं जब समाज किये हुये कार्यों का मूल्यांकन करता है।

इसे हम संयोग ही कहेंगे कि आज तक इलेक्ट्रो होम्योपैथिक के कार्यों का किसी ने मूल्यांकन ही नहीं किया ! न तो समाज ने और न ही सरकार ने !! समाज समय–समय पर हमारे कार्यों पर टिप्पणी करता रहता है और रही बात सरकार की तो शायद सरकार हमारे किसी कार्य को महत्व ही नहीं देती है, महत्व देना तो दूर की बात है जब भी कभी अवसर प्राप्त होता है सरकार में बैठे हुये अधिकारी तन्ज कसने का अवसर नहीं गवांते हैं ऐसा नहीं है कि इलेक्ट्रो होम्योपैथी में काम नहीं होता है, काम बहुत होता है लेकिन लोगों की नजरें हमारे काम पर नहीं पड़ती हैं या यूँ कहलें कि देख कर भी अनदेखा कर दिया जाता है।

जबसे 28 फरवरी, 2017 को भारत सरकार का मैं के निऽम के लिये नोटिफिकेशन जारी हुआ तबसे हर तरफ हमारे कार्यों को लेकर तरह–तरह की चर्चायें होती रहती हैं, पता नहीं इलेक्ट्रो होम्योपैथी के साथ क्या है कि हर समय पर इस पद्धति के लिये दोहरे मापदण्ड अपनाये जाते हैं, एक नहीं कई ऐसे उदाहरण हैं जो दोहरे मापदण्डों को उजागर करते हैं, कुछ उदाहरण हम उद्धृत कर रहे हैं। 21 जून का आदेश पूरे देश में काम करने का अवसर देता है परन्तु राज्य सरकारें अवसरों के उपयोग का मार्ग ही नहीं प्रशस्त करती हैं, 04 जनवरी, 2012 का आदेश प्रदेश में चिकित्सा व्यवसाय करने का भरपूर अधिकार तो देता है परन्तु, अधिकारपूर्वक चिकित्सा व्यवसाय करने के लिये आवश्यक पंजीकरण की व्यवस्था सरकार ने आज तक नहीं की ! है न दोहरा मापदण्ड एक ओर सरकार चाहती है कि हम कार्य करें जिससे सरकार हमारे लिये कानून बनाये वहीं दूसरी ओर देश की स्वास्थ्य मंत्री सदन में कहती हैं कि जब तक मान्यता नहीं मिल जाती तब तक यह जनसामान्य से दूर रहें जब हम समाज में जायेंगे ही नहीं तो हमें सफलता मिलेगी कैसे ?हमें सरकार की नेक नियती पर जरा भी सन्देह नहीं है परन्तु जिस प्रकार के दोहरे मापदण्ड इलेक्ट्रो होम्योपैथों के लिये अपनाये जाते हैं इन्हें समाप्त करने के लिये कोई निश्चित रणनीति तो बननी ही चाहिये अन्यथः दोहरे मापदण्डों के चलते हम कभी कसौटी में खरे उतरेंगे ही नहीं।

आज कल पूरे देश में सकारात्मक विचारों के साथ इलेक्ट्रो होम्योपैथिक की भावी दशा को अच्छा बनाने के लिये लगभग देश के सभी इलेक्ट्रो होम्योपैथिक संगठन जी–जान से लगे हैं, सभी यह प्रयास कर रहे हैं कि कोई ऐसी एक व्यवस्था बने जिससे कि इलेक्ट्रो होम्योपैथी का भविष्य अति सुन्दर हो सके, जब कभी ऐसे कार्यक्रम चलते हैं तो कार्यों की बात होने लगती है, मैं कुछ अपनी भावनायें आपसे साझा करना चाहता हूँ और यह कयास भी लगाना चाहता हूँ कि मेरा चिन्तन सही दिशा में जा रहा है कि नहीं ...

28 फरवरी, 2017 को जो नोटिफिकेशन जारी हुआ है उसमें मांगी गई विभिन्न जानकारियों में एक सूचना इलेक्ट्रो होम्योपैथिक के कार्य से सम्बन्धित भी है इसलिये जहाँ कहीं भी इलेक्ट्रो होम्योपैथिक की चर्चा होती है वहाँ पर कार्यों की चर्चा अपने आप ही शुरु हो जाती है, पिछले दिनों की ही बात है जब मैं एक कार्यक्रम में इलाहाबाद गया वहाँ पर वरिष्ठ इलेक्ट्रो होम्योपैथों को सुनने का अवसर प्राप्त हुआ, यहीं पर एक अति वरिष्ठ इलेक्ट्रो होम्योपैथ चर्चा करते हुये कहने लगे कि इलेक्ट्रो होम्योपैथी में कार्य नहीं होते हैं ! कार्य होने चाहिये !! उन्होंने एक अनुभव बताया कि उनका सम्पर्क देश के एक नामचीन भाजपा नेता एवं पूर्व स्वास्थ्य मंत्री डा0 सी0 पी0 ठाकुर से हुआ, डा0 सी0 पी0 ठाकुर इलेक्ट्रो होम्योपैथिक को बहुत करीब से जानते हैं और समय–समय पर इलेक्ट्रो होम्योपैथी को सहयोग व समर्थन की बात भी करते हैं, यह अलग बात है कि अपने स्वास्थ्य मंत्रित्व के कार्यकाल में वे इलेक्ट्रो होम्योपैथिक का कुछ भला नहीं कर सके ने चर्चा में कहा कि इलेक्ट्रो होम्योपैथी वाले बातें तो बहुत करते हैं परन्तु कार्य नहीं करते, उन्होंने व्यक्तिगत उदाहरण देते हुये कहा कि जब मैं कालाज़ार पर शोध कर रहा था तब मैनें अपने सारे शोध के प्रपत्र भारत सरकार को भेजे परन्तु सरकार ने उसपर कोई रुचि नहीं दिखायी, तब मैनें अपने कार्यों को डब्लू0 एच0 ओ0 भेजा वहां मेरे कार्य को सराहा गया और अन्ततः भारत सरकार ने मुझे कालाज़ार पर ही पदमश्री प्रदान किया।

अब प्रश्न यह है कि जब इतने ताकतवर व्यक्ति की सरकार ने आसानी से नहीं सुनी तो हम इलेक्ट्रो होम्योपैथों को सुनने वाला कौन है ?जिस चिकित्सक ने कालाज़ार पर कार्य किया वह बिहार राज्य का सम्मानित एलोपैथिक का चिकित्सक है, राजनीति में भी अच्छी पकड़ है, जब उनके लिये ऐसा व्यवहार तो हमें तो अपने बारे में सोचना ही नहीं चाहिये ! परन्तु ऐसा भी नहीं है, अब समय आ गया है कि सरकार हमारे कार्यों का मूल्यांकन करे।

दूसरा उदाहरण :– बिहार राज्य के पूर्व स्वास्थ्य मंत्री श्री अश्वनी चौबे जी के किसी करीबी रिश्तेदार को कैंसर हुआ, वह कैंसर की पीड़ा से इतना परेशान था कि रातों–दिन तड़पता था, माननीय मंत्री जी भी उसकी पीड़ा नहीं देख पाते थे, हर चिकित्सा पद्धति आज़माई जा चुकी थी परन्तु रोगी को राहत नहीं मिल रही थी तभी किसी ने माननीय मंत्री जी को इलेक्ट्रो होम्योपैथिक का नाम सुझाया बिहार राज्य की राजधानी पटना के एक इलेक्ट्रो होम्योपैथ चिकित्सक नें आगे बढ़कर उस रोगी को इलेक्ट्रो होम्योपैथिक चिकित्सा दी, जबतक रोगी जीवित रहा दर्द से राहत रही। निश्चित रुप से मंत्री जी इलेक्ट्रो होम्योपैथिक की इस योग्यता से प्रभावित हुये उन्होंने इलेक्ट्रो होम्योपैथी की भूरि–भूरि प्रशंसा की उस चिकित्सक को भी आदर व सम्मान दिया जिसके प्रयासों से रोगी को कष्ट से मुक्ति मिली थी।

माननीय मंत्री जी ने सब कुछ किया, पीठ थपथपाई, गले से लगाया, उज्ज्वल भविष्य की कामना भी की परन्तु ऐसा कुछ नहीं हो सका जिससे सरकार में इलेक्ट्रो होम्योपैथी की पैठ बन पाती, आज भी माननीय अश्वनी चौबे जी (अब भाजपा के सांसद) जहाँ कहीं भी मंच पर जाते हैं इलेक्ट्रो होम्योपैथी की प्रशंसा करना नहीं भूलते, प्रशंसा आत्म सम्मान एवं गौरव तो बढ़ाता है परन्तु वह नहीं मिलता जिसकी हमें जरुरत है, हमें जरुरत है एक ऐसे कानून की जो इलेक्ट्रो होम्योपैथी को स्वतंत्र चिकित्सा पद्धति के

रुप में स्थापित कर सके, हमें जरुरत है एक ऐसे निकाय या प्रधिकरण की जो इलेक्ट्रो होम्योपैथी में हो रहे कार्यों का मूल्यांकन कर सके जिससे कि सरकार इलेक्ट्रो होम्योपैथी के लिये एक रास्ता खोज सके।

ऐसा नहीं है कि हमारे कार्यों का मूल्यांकन नहीं हुआ है, जब–जब हमारे कार्यों का मूल्यांकन हुआ है तब–तब हम कसौटी पर खरे उतरे हैं और सरकार ने भी हमें निराश नहीं किया है, हम अपनी यादों को थोड़ा अतीत में ले जायें तो हमें स्वंय अनुभव हो जायेगा कि सरकार से इलेक्ट्रो होम्योपैथी को सदैव से सहयोग और समर्थन मिलता रहा है। देश की आजादी के तुरन्त बाद सन् 1952–53 में उस समय चिकित्सकों की कमी के कारण और लोगों में स्वास्थ्य के प्रति जागरुकता नहीं होने के कारण जनसामान्य को कष्ट से दो–चार भी होना पड़ता था और तो और उस समय उचित व्यवस्था नहीं होने के कारण महामारियां भी खूब फैलती थीं जिससे कि हज़ारों लोग असमय ही काल के

शेष अंतिम पेज पर

विचारों के माध्यम से पद्धति प्रेम

गुज़रे पखवारे 15 अगस्त के दिन समस्त भारत वासियों ने आज़ादी का यह पर्व बड़े धूम–धाम से मनाया, जो भारत देश के बाहर रहते हैं उन्होंने भी अपने–अपने स्थान पर आज़ादी के इस पर्व को मनाने में कोई कोर–कसर नहीं छोड़ी, गली–कूचों से लेकर कस्बों और शहरों तक इस आज़ादी के पर्व की धूम दिखाई दी, बाल हो, वृद्ध हो, किशोरी हो या नारी हर एक के मन में देशप्रेम का भाव झलक रहा था, युवओं की बात क्या करें, उनकी मस्ती अलग ही थी, हम इलेक्ट्रो होम्योपैथ भी इसी देश के नागरिक हैं, हमारे अन्दर भी देश के प्रति प्रेम है, आदर है, सत्कार है परन्तु जितना प्रेम हम देश से करते हैं उससे कम प्रेम इलेक्ट्रो होम्योपैथी से भी नहीं करते।

हमें इलेक्ट्रो होम्योपैथी बहुत प्यारी है, जैसी भी है, जिस हाल में है, हमारी है, हम पैथी के हैं और पैथी हमारी है, जिस प्रकार देश के दीवाने देश के तराने गाते हैं वही तराना हम अपने इलेक्ट्रो होम्योपैथी के लिये भी गाते हैं, हमार जज्बा है हम जियेंगे हम मरेंगे ऐ वतन तेरे लिये आज समय की मांग है कि हमारा हर साथी इलेक्ट्रो होम्योपैथी के लिये जिये और इलेक्ट्रो होम्योपैथी के लिये मरे, ज़रुरत इसलिये आन पड़ी है क्योंकि आज़ादी के 70 सालों के बाद भारत सरकार के मन में यह इच्छा जागी है कि वह इलेक्ट्रो होम्योपैथी के लिये कोई नीतिगत निर्णय ले, इसी नीतिगत निर्णय को लेने हेतु 28 फरवरी, 2017 को भारत सरकार ने इलेक्ट्रो होम्योपैथी के मैकेनिज़्म के लिये जो नोटिस जारी की है और इस नोटिस के माध्यम से सरकार ने जो–जो जानकारियां चाही हैं वह इस बात को प्रदर्शित करती हैं कि वर्षों की हमारी प्रतीक्षा एवं संघर्ष अब समाप्त होने वाला है और एक नया सूरज निकल कर इलेक्ट्रो होम्योपैथी की आशा में चार–चाँद लगा देगा परन्तु सूचनाओं को देने व लेने में हमें अति सतर्कता की आवश्यकता है ज़रा सी चूक हमारी सारी कामनाओं पर पानी फेर सकती है, हमें अति उत्साही नहीं होना चाहिये 6 महीने का समय बीत जाने के बाद भी अभी भी 4 माह का समय शेष है और इन 4 महीनों को हमें बहुत संयम के साथ व्यतीत करने हैं।

हमें मार्च के महीने से सबक लेना चाहिये जो कुछ भी घटा वह अति उत्साह का परिणाम है, पहले हम की इच्छा ने हमें एक झटका दिया है, हमें यह कभी नहीं भूलना चाहिये कि 31 दिसम्बर के बाद सरकार जब सारे प्रपोज़लों की समीक्षा करेगी और जो कुछ भी आदेश पारित करेगी वह व्यक्ति विशेष, समूह, संस्था या संगठन के लिये न होकर इलेक्ट्रो होम्योपैथी के लिये होगा, यह अलग बात है कि आदेश किसी एक विशेष प्रपोज़ल पर हो जाये, सरकार की दृष्टि समान है, पिछले 25 नवम्बर, 2003 को भारत सरकार ने जो आदेश किया और जिसके गलत व्याख्यित होने के जो परिणाम सामने आये वह सभी ने भोगे, उससे कोई अछूता नहीं रहा, ठीक इसी तरह से 2018 में जो भी परिणाम आयेंगे वह समूचे इलेक्ट्रो होम्योपैथिक जगत के लिये होंगे इसलिये न कोई आगे है न कोई पीछे यह व्यर्थ का भ्रम है कि जो कुछ भी करेंगे वह हम ही करेंगे।

सरकार ने पूरे देश से आवहन किया है कि वह प्रपोज़ल भेजे, प्रपोज़ल का स्वरुप व आकार क्या हो ?यह सब सरकार ने स्पष्ट कर दिया है, वैसे यदि 28 फरवरी, 2017 के पत्र का गंभीरतापूर्वक अध्ययन किया जाये तो जो तथ्य उभर कर सामने आते हैं वह यह है कि सरकार चाहती है कि कोई फेडरल प्रतिवेदन आये, जिसमें सबकी भागीदारी भी सुनिश्चित हो, ऐसे प्रतिवेदन पर ही सरकार विचार कर कोई दिशा तय करेगी, अब यह हम सभी पर निर्भर करता है कि हम क्या करेंगे ?वैसे अभी तक जो दिखाई पड़ रहा है उससे तो यही लगता है कि प्रथम आवृत्ति में जिस तेजी के साथ प्रपोज़ल सरकार के पास भेजे गये थे उसकी तुलना में अब कुछ गति मंद पड़ चुकी है, प्राप्त जानकारी के आधार पर जिन व्यक्तियों, समूहों या संगठनों के प्रपोज़ल तैयार हैं वे अभी भी प्रतीक्षा कर रहे हैं कि किस अवसर पर उन्हें अपने प्रपोज़ल प्रस्तुत करने हैं वैसे अभी तक पश्चिम बंगाल से एक प्रपोज़ल एकदम तैयार बताया जा रहा है, कर्नाटक का एक संगठन भी प्रपोज़ल देने का दम भर रहा है परन्तु शायद अभी तक प्रपोज़ल प्रस्तुत नहीं किये गये हैं।

प्रपोज़ल देने य न देने में कोई अड़चन नहीं है परन्तु जो भी सूचना दी जाये वह तर्क संगत हो और प्रमाणिक भी हों।

हमारे द्वारा प्रस्तुत हर शब्द का बहुत ही गहराई से मूल्यांकन होगा तदोपरान्त किसी नीति का निर्माण, इसलिये हम जितना प्रेम पद्धति से करते हैं विचारों के माध्यम से दिखाना होगा।

बोर्ड की सेमेस्टर परीक्षायें 25 सितम्बर से

BOARD OF ELECTRO HOMOEOPATHIC MEDICINE,U.P.

8-Lal Bagh, Kamla Sharma Marg, Lucknow-226001 E-mail registrarbehmup@gmail.com

PROGRAMME FOR EXAMINATION September 2017

Name of the course	25th September, 2017 Monday	26th September, 2017 Tuesday	27th September, 2017 Wednesday	28th September, 2017 Thursday
F.M.E.H. 1st. Semester	Anatomy & Physiology	Pharmacy &Philosophy	XX	XX
F.M.E.H. 2nd. Semester	Pathology	Hygiene & Health	Environmental Science	XX
F.M.E.H. 3rd. Semester	Opthalmology including E.N.T.	M.Jurisprudence & Toxicology	Dietetics	XX
F.M.E.H. Final Semester	Obstetrics & Gynaecology	Materia Medica	Practice of Medicine	XX
A.C.E.H.	Anatomy & Physiology	Pharmacy- Philosophy & Materia Medica	Pathology-Hygiene and M.Jurisprudence	Midwifery Gynics, Opthalmology & Practice of Med.

Timing → 8:00 A.M.to 11:00 A.M.

Ateeq Ahmad
Examination Incharge

गाल में समा जाते थे तत्समय चिकित्सा व्यवस्था की अधिकांश जिम्मेदारी वैद्यों पर थी, होम्योपैथी का भी इतना विकास नहीं हुआ था, साथ– साथ लोगों में होम्यापैथी के प्रति विश्वास नहीं के बराबर था, यूनानी चिकित्सा पद्धति के हकीम अपना कोई भी प्रभाव नहीं डाल पाते थे, एलोपैथी का इतना विस्तार नहीं हुआ था जितना कि आज है, गांव की जनता को ग्रामीण वैद्यों या झाड़–फूंक करने वाले ओझाओं/तान्त्रिकों का सहारा लेना पड़ता था जिससे कि कभी–कभी दुर्घटनायें भी घट जाया करती थीं। तब हमारे देश के तत्कालीन प्रधानमंत्री पं0 जवाहर लाल नेहरु ने

प्राधिकरण का गठन .....

तीसरे पेज से आगे

आवाहन किया कि ऐसी चिकित्सा पद्धतियां जो स्वास्थ्य सेवाओं में अपना योगदान प्रदान कर सकती हों निकलकर सामने आयें, इलेक्ट्रो होम्योपैथों ने भी देश प्रेम की भावना से ओत–प्रोत होकर अपनी सेवायें देने की प्रस्तुति की।

उत्तर प्रदेश के विख्यात इलेक्ट्रो होम्योपैथिक चिकित्सक स्व0 डा0 नन्द लाल सिन्हा ने भी सरकार के समक्ष अपना दावा प्रस्तुत किया, कैंसर और कुष्ट जैसे असाध्य रोगों पर इलेक्ट्रो होम्योपैथी की साध्यता का दावा किया, तभी सरकार ने 27 मार्च, 1953 को एक अर्धशासकीय पत्र जारी कर इलेक्ट्रो होम्योपैथी के मंगल भविष्य की कामना की और आश्वस्त किया कि उचित अवसर आने पर सम्मानजनक स्थान दिया जायेगा। यह उदाहरण यहां पर इसलिये बताया गया है कि उस समय स्व0 डा0 नन्द लाल सिन्हा के कार्यों की निगरानी व परिणाम हेतु तत्कालीन सिविल सर्जन (आज का सी0एम0ओ0) को निर्देशित किया गया था अर्थात कार्यों का महत्व तभी होता है जब हमारे कार्यों के मूल्यांकन के लिये कोई सरकारी इकाई या सरकारी प्रधिकरण अपनी रिपोर्ट प्रस्तुत करे।

आज़ादी के 70 वर्षों के बाद आज तक इलेक्ट्रो होम्योपैथी के लिये कोई भी शासकीय इकाई का गठित नहीं होना एक बहुत बड़ी कमी है, अब जब सरकार मैकेनिज़्म के माध्यम से इलेक्ट्रो होम्योपैथी के लिये कुछ करना चाहती है तो सरकार ईमानदारी से तभी कुछ इलेक्ट्रो होम्योपैथी के लिये कर पायेगी जब इलेक्ट्रो होम्योपैथी के क्षेत्र में होने वाले कार्यों का मूल्यांकन सरकारी निगरानी में हों।

अस्तु हमारी मांग है कि सरकार शीघ्र से शीघ्र मूल्यांकन प्रधिकरण का गठन करे।